(ईस परचे को बेअदबी से बचाए)

माहे मुहर्रम

“नए साल की ‘ख़ुशियां’ या ‘ग़मे हुसैन’ ﵁”

“जो आंख हमारे (अह्‌ले बैत ﵈ के) ग़म में रोइ या एक कतरा आंसू हमारे लिए गिराया, अल्लाह ﷻ उसे बहिश्त (जन्नत) से नवाज़ेगा ।” - सैयदना इमाम हुसैन

(फजाइल-ए-सहाबा, इमाम अहमद बिन हम्बल﵀)

देखा जो चांद मुहर्रम का, करबल का फसाना याद आया
वो धूप से तपती रेती पर, अहमद ﷺ का घराना याद आया ।

अय उम्मते रसूलल्लाह ﷺ

अस्सलामु अलयकुम,

* इस्लाम एक वाहिद मज़हब है जिसके साल का आगाज भी कुरबानी से और इख़्तेताम भी कुरबानी पर । इसी लिए इस्लाम की १४०० साल की तारिख में दुसरे मज़हबो की तरह नए साल की खुशियां न मना कर माहे मुहर्रम में ‘ग़मे हुसैन﵁’ मनाया जाता है । मगर सद अफसोस पिछले कुछ 4-5 सालों से मुहर्रम के चांद के साथ ही नए साल की खुशियां व मुबारकबादी का एक नया रिवाज इजाद किया गया है । ता’ज्जुब की बात तो ये है की इस पर अह्‌ले इल्म भी अमल कर रहे है !
* बेशक नए साल की ख़ुशियां या मुबारकबादी में शरीयतन कोइ हर्ज नहि है, ना हि हराम है । मगर ‘मस्लके अह्‌ले सुन्नत’ का अकीदा रसूलल्लाह ﷺ की सुन्नत, मुहब्बत, निस्बत व मवद्दत पर मबनी है । ‘अह्‌ले सुन्नत की तो बुनियाद ही निस्बत है ।’ अह्‌ले सुन्नत के अकाइद की बुनियाद में रसूलल्लाह ﷺ की निस्बत है, अह्‌ले बैत ﵈ की निस्बत है । ख़ुल्फा-ए-राशिदीन व सहाबा ए किराम ﵃ की निस्बत है । कुतबुल अक़ताब सैयदना अब्दुल क़ादिर जिलानी ﵀ व सुल्तानुलहिन्द ख्वाजा-ए-ख्वाजगान गरीब नवाज़ ﵀ व दीगर औलिया-मसाइख़ ﵀ की निस्बत है ।
* लफ्ज़ ‘निस्बत’ या’नी Relationship (रिलेशनशीप) या ‘तआल्लुक’ या ‘संबंध’ । हमारी रसूलल्लाह ﷺ के साथ निस्बत है की हम आप ﷺ के उम्मती है, उनका कलमा पढ़नेवाले है । कल रोज़े कयामत उनकी शफाअत के तलबगार है । बतौर निस्बते रसूलल्लाह ﷺ एक उम्मती जो आशीके रसूल ﷺ होने का भी दावा करे तो उस पर वाजिब है की, ***“जब रसूलल्लाह ﷺ खुश तो उम्मती भी खुश, और जब रसूलल्लाह ﷺ ग़मगीन तो उम्मती भी ग़मगीन।”***
* मुहर्रम के 10 दिनो में हमारे आका व मौला सैयदना मुहम्मदुर्रसूलल्लाह ﷺ की अह्‌ले बैत पर करबला में कैसा ज़ुल्म हुआ वो तो तफसील से इस परचे में बयान नही हो सकता और ना ही कोई उम्मती ईससे अंजान है । नवास-ए-रसूल ﷺ जन्नत के जवानों के सरदार सैयदना इमाम हुसैन ﵁ की शहादत व सर को नेज़े पर चढाना, तीन दिन की अह्‌ले बैत की औरतों, बच्चों और मर्दो की भूख व प्यास, अली अकबर व क़ासिम ﵄ जैसे जवानों की बिना सर की ज़ख़्मी लाशे, औन व मुहम्मद ﵄ जैसे 8-10 की साल के बच्चों के कटे हुवे सर, मासूम अ़ली असगर ﵁ का छिदा हुआ गला, ५ साल की सैयदा सुक़ैना बिन्ते हुसैन ﵂ के कानों की बालियां ख़िंचकर लहुलुहान करना... कलम लिखने से कांपती है....ऐसे ज़ुल्म ढाए गए ।
* सैय्यदना इमाम हुसैन ﵁ ने ये क़ुरबानी अपने नानाजान ﷺ की उम्मत की इस्लाह व ज़ुल्म के ख़िलाफ हक़ की आवाज़ बुलन्द करने के लिए दी । मगर अफसोस..... सद अफसोस आज उम्मत ग़मे हुसैन ﵁ भुलकर मुबारकबादी और ख़ुशीयां मना रही है और इसके शरइ तौर पर जाइज़ होने का जवाज़ ढुंढकर फतवे दे रही है ।

◈ 1400 साल बाद भी ग़म क्यूं मनाया जाए ? ◈

* हां, आज इन वाकेआत को 1400 साल हो गए है तो अब ‘ग़म’ क्यूं मनाया जाए ? तारिख़ की किताबो में से कई हस्तियां,

कई जंगी दास्ताने और कई वाकेआत मिट गए । मगर वाकेआ करबला आज भी ग़मे हुसैन में ज़िन्दा है । क्यूंकि नस्ले इन्सानी की तारिख में हज़रते आदम से लेकर हज़रत इसा तक कमोबेश 1,23,999 अम्बिया-ए-किराम में से किसी नबी के घरवालों पर ऐसा ज़ुल्म नहि किया गया, जो करबला में सरवरें अम्बिया, मुहम्मदुर्रसूलल्लाह के नवासे व अहले बैत पर रसूल का ही कलमा पढनेवालो ने किया । 78 सरों को नेज़ों पर महिनो तक घुमाया गया ।

* **और वोह ग़म क्यूं न मनाया जाए** कि वाकेआ करबला अभी हुआ भी नही, अभी तो इमाम हुसैन रसूलल्लाह की गोद में खेल रहे है की फरिश्ते आकर रसूलल्लाह को शहादते हुसैन की खबर सुनाए और हमारे आका ग़मगीन होकर रोने लगे ।
* **और वोह ग़म क्यूं न मनाया जाए** कि हमारे मदीनेवाले प्यारे आका, मुहम्मदूर्रसूलल्लाह ने इस दुनिया से परदा फरमा लिया हो, बावजूद इसके हि.स. 61 में 10 मुहर्रम को वाकेआ करबला हो और सैय्यदना इमाम हुसैन शहीद हो तो उम्मुल मो'मिनीन सैय्यदा उम्मे सलमा व सहाबी-ए-रसूल सैय्यदना इब्ने अब्बास को उसी वक्त 10 मुहर्रम को ख़्वाब में हमारे आका मुहम्मदुर्रसूलल्लाह गुबार आलुद बाल-दाढी के साथ ग़मगीन हालत में शहादते हुसैन पर ग़म का ईज़हार करे ।
* अय उम्मते रसूलल्लाह ! अय आशिके रसूलल्लाह ! अय लब्बैक या रसूलल्लाह का दम भरनेवालो... ज़रा सोचो कितना गहरा सदमा व ग़म हुआ होगा हमारे नबी रसूलल्लाह को ।
* **ताज्जुब है, आका रसूलल्लाह जिन अशराह में इतने ग़मगीन हुए उन दिनों में उनकी उम्मत खुशियां मनाने के लिए या मुबारकबादी की शरइ दलील ढूंढ रही है, क्या यही है निस्बते रसूलल्लाह ??? क्या यही वफादारी है अहले बैत के साथ ???**

हमने इस Pamphlete में ग़मे हुसैन में ग़मगीन होना और रोकर आंसू बहाने पर रसूलल्लाह की अहादीसे मुबारका पेश की है और 1400 साल से अहले सुन्नत के सुफिया-ए-किराम व उलमा-ए-किराम व मशायख़ीन का क्या तरीका रहा है इसको ब-हवाला कुतुबे अहले सुन्नत से पेश करने की काविश की है जिसे अल्लाह कुबुल फरमाए और हम सब को इस पर अमल करने की तौफीक अता फरमाए । आमीन...

◈ शहादते हुसैन से पेहले रसूलल्लाह का ग़मे हुसैन ◈

* उम्मुल मो'मिनीन हजरत उम्मे सलमा फरमाती है की हसन और हुसैन दोनो बचपन के आलम में मेरे घर में रसूलल्लाह के सामने खेल रहे थे कि जिब्रइल नाज़िल हुए और कहा, 'या मुहम्मद ! बेशक आपकी उम्मत आपके इस बेटे (हुसैन) को आपके बाद क़त्ल कर देगी ।' और आपको वहां (करबला) की थोडी सी मिट्टी दी । आप ने इस मिट्टी को सुंघा और फरमाया, 'इसमें रंज व बला की बू है ।' **आप ने हुसैन को अपने सीने मुबारक से लगा लिया और खुब रोए ।**
* अल्लामा इब्ने हजर लिखते है : हुजुर ने फरमाया, 'अय उम्मे सलमा ! यह मिट्टी करबला की है, जिस दिन यह खून बन जाए समझ लेना मेरा बेटा हुसैन शहीद हो गया ।' उम्मेल सलमा ने वह मिट्टी शीशी (बोटल) में रख दी । वह रोजाना उसे देखा करती थी । **(तेहज़ीबुत्तेहज़ीब, जिल्द दुवम, सफा-347) (ख़साइस-ए-कुबरा, जिल्द दुवम, सफा-125) (सवाइके मुहर्रिकह, सफा-191) (सिर्रुश्शहादतैन, सफा-28)**
* **मुसनद अहमद की हदीस में है :** सैय्यदना अबु अब्दुल्लाह ताबई के बेटे सैय्यदना अब्दुल्लाह बिन नजी अपने वालिद से बयान करते है जो सैय्यदना अली बिन अबु तालिब के लिए (सफर में) सामान ए तहारत का बंदोबस्त करते थे कि वो सैय्यदना अली बिन अबु तालिब के साथ सफर में थे, जब आप सिफ्फिन को जाते हुए (मक़ाम) नैनवा के बराबर पहुंचे तो आप ने बुलंद आवाज़ से कहा: "ए अबु अब्दुल्लाह ! (ये सैय्यदना हुसैन बिन अली की कुनियत थी) फरात के किनारे सब्र करना, ए अबु अब्दुल्लाह ! फरात के किनारे सब्र करना, मैंने पूछा: क्या (ख़ास) बात हो गई

(ए अमीरुल मो'मिनीन) ?" सैय्यदना अली बिन अबु तालिब ﷺ ने फरमायाः "एक दिन रसूलल्लाह ﷺ के पास हाज़िर हुआ, तो (क्या देखता हूं कि) आप ﷺ की मुबारक आंखो से आंसू रवां थे, मैंने (बेचैन होकर) अर्ज़ कियाः "क्या आप को किसीने नाराज़ किया है ? आप ﷺ की मुबारक आंखो से आंसू क्यूं बह रहे है ?" रसूलल्लाह ﷺ ने ईरशाद फरमायाः नहीं । बल्कि **अभी अभी सय्यिदना जिब्रईल ﷺ मेरे पास से उठ कर गए है और उन्होंने पूछा कि क्या में आप ﷺ को हुसैन ﷺ के मकतल की मिट्टी लाकर दिखाउं ? मैंने कहा हां दिखाओ ! चुनांचे उन्होंने मिट्टी की एक मुट्ठी भर कर मुझे दी, तो इस पर मैं अपने आंसू ना रोक सका ।"**

(मुस्नद अहमद:822, अल मुस्तदरकलिल हाकिम :4884)

◈ शहादते हुसैन ﷺ के बाद रसूलल्लाह ﷺ का ग़मे हुसैन ﷺ ◈

* सलमा ﷺ बयान करती है की मैं (उम्मुल मो'मिनीन) उम्मे सलमा ﷺ के यहां गई तो वह रो रही थी । मैंने रोने की वजह पूछी तो उन्होने जवाब दिया, मैंने रसूलल्लाह ﷺ को ख़्वाब में देखा है की आप ﷺ के सर मुबारक व दाढी मुबारक पर ख़ाक पड़ी थी । मैंने अर्ज किया, 'अय अल्लाह ﷺ के रसूल ﷺ आपको क्या हुआ है ? आप ﷺ ने फरमाया, मैं अभी हुसैन ﷺ की क़त्लगाह से आया हूं ।' (तहजीबुत्तेहज़ीब तहजीब, जिल्द दोम, सफा-356) (तारीख़ुल ख़ुल्फा, सफा-304) (अलबिदाया वन्निहाया, जिल्द, पंजुम, सफा-200) (तिर्मिजी शरीफ, जिल्द-दुवम सफा 731 (अल मुस्तदरक लिल हाकिम, जिल्द चाहरुम -19)
* इमाम अहमद बिन हम्बल ﷺ सैय्यदना इब्ने अब्बास ﷺ से रिवायत करते है की, सैय्यदना अब्बास ﷺ फरमाते है की 'एक रोज दोपहर के वक़्त ख़्वाब में मैंने रसूलल्लाह ﷺ को देखा की आपके गेसूए मुअत्तर (ज़ुल्फ मुबारक व दाढी मुबारक के बाल) बिखरे हुए है और गुबार आलूद है, आपके हाथों में ख़ून से भरी एक शीशी है, तो मैंने पूछा : 'मेरे मां-बाप आप ﷺ पर क़ुरबान ! ये क्या है ?' तो आपने फरमाया, हुसैन ﷺ और उनके साथियों का ख़ून है, मैं इसे जमा कर रहा हूं ।
* सैय्यदना इब्ने अब्बास ﷺ फरमाते है की, मैंने उस वक़्त और तारीख़ को याद रखा और जब ख़बर आई तो मालूम हुआ की, सैय्यदना ईमाम हुसैन ﷺ उसी वक्त और उसी तारीख़ को शहीद किए गए थे । (अख़रजहु अहमद बिन हम्बल ﷺ व इमाम बैहकी ﷺ (मिश्कात शरीफ, भाग फजाइल-ए-अहले बैत, सफा-461) (अलबिदाया वन्निहाया, जिल्द-8, सफा-30)

जहां दीगर सुन्नतों पर लोगों से जंग-ओ-जिदाल करते फिरना दीन नजर आता है वहां हुजुर-ए-अकरम ﷺ की ग़मे हुसैन ﷺ में ग़मगीन होकर रोने की ये सुन्नत कहीं नजर ही नहीं आती है ।

◈ शहादते हुसैन ﷺ से पेहले इमाम मौला अ़ली ﷺ का ग़मे हुसैन ﷺ में रोना ◈

* इब्ने सअ्द - ने शअ्बी से बयान किया है की सिफ्फिन की तरफ जाते हुए हजरत अ़ली ﷺ करबला से गुजरे । जब फुरात के किनारे नैनवा बस्ती से गुजरे तो मौला अ़ली ﷺ ने वहां खडे होकर उस ज़मीन का नाम पूछा तो आप को बताया गया की इसे करबला कहते है, **तो आप ﷺ रो पडे** । यहां तक की आपके आंसूओ से ज़मीन तर हो गई । फिर फरमाया : **मैं रसूलल्लाह ﷺ के पास गया तो आप ﷺ रो रहे थे । मैंने अर्ज किया आप किस वजह से गरिया कुनां है ? फरमाया : अभी जिब्राइल ﷺ ने आकर ख़बर दी है की मेरा बेटा हुसैन ﷺ फुरात के किनारे एक जगह क़त्ल होगा, जिसे करबला कहा जाता है, फिर जिब्राइल ﷺ ने एक मुट्ठी में मिट्टी पकड़कर मुझे सुंघाई तो मैं अपने आंसूओ को रोक नहीं सका ।**

* हजरत असबग बिन नबाता ﷺ - फरमाते है, की जब हम मौला अ़ली ﷺ के साथ जंगे सिफ्फीन से वापस आए तो करबला से गुजर रहे थे जब कब्रे हुसैन ﷺ की जगह आई तो **हजरत अ़ली ﷺ रुक गए और रोकर शुहदा-ए-करबला के मुतालिक फरमाया : 'यहां उन शुहदा-ए-किराम के उंट बांधे जाऐंगे, यहां उनके कज़ावे रखने की जगह है, यहां उनका खून बहने का मकाम है, कितने जवान आले मुहम्मद ﷺ के साथ खुले मेदान में क़त्ल किए जाएंगे उन पर ज़मीन व आसमान रोएंगे ।'**

(दलाइलुन्नुबुव्वत, अबू नुअयम (नईम) अस्फहानी, सफा-509) (ख़साइसे कुबरा, जिल्द-दुवम, सफा-126) (सिर्रुश्शहादतैन, सफा-3)

◈ उम्मुल मो'मिनीन सैय्यदा उम्मे सलमा ﷺ का ग़मे हुसैन ﷺ में गिरया ◈

* अल्लामा ज़हबी ने लिखा है, - शहर बिन होसबने कहा : मैं उम्मुल मो'मिनीन हजरत उम्मे सलमा ﷺ के पास था जब क़त्ले हुसैन ﷺ की खबर उन तक पहुंची, वह पुकार उठी : क्या वाकई उन्होने कर डाला है ? फिर बद्दुआए देती हुई बेहोश होकर ज़मीन पर गिर गई, और वोह यह कह रही थी । 'अल्लाह ﷻ उनके घर और उनकी कब्र को आग से भर दे ।'

(सयिर अअ़लाम अल नुबला, जिल्द-सोम, सफा-318)

* एक और रिवायत में है की उम्मुल मो'मिनीन हजरत उम्मे सलमा ﷺ फरमाती है की जब क़त्ल-ए-हुसैन की रात आई तो मैं रो पडी और मैंने बोतल को खोला तो मिट्टी खून होकर बह पडी ।

(सवाईके मुहर्रिकह, हाफिज ईब्ने हजर मक्की, सफा-641) (बहवाला : ज़वायद अल मुस्नद इमाम अहमद बिन हम्बल)

◈ ग़मे हुसैन ﷺ में आसमान का गिरया करना ◈

* इमाम जलालुद्दीन सुयूती ﷺ अपनी तफसीरे कुरआन 'तफसीर दुर्रे मन्सुर' में 'सूरह दुखान' की आयत नंबर 29 की तफसीर में लिखते है -

فَمَا بَكَتْ عَلَيْهِمُ السَّمَآءُ وَالْاَرْضُ وَمَا كَانُوْا مُنْظَرِيْنَ ﴿٢٩﴾

तरजुमा :- फिर न (तो) उन पर आसमान और ज़मीन रोए और न ही उन्हे मोहलत दी गई ।

* **तफसीर :-** इमाम ईब्ने अबी हातिम ﷺ, हजरत उबैद अल मकतब ﷺ से और वोह हजरत इब्राहिम अल नखई ता'बई ﷺ से रिवायत नक़्ल करते है : जब से कायनात तख़्लीक हुई है आसमान और ज़मीन सिवाय दो अफराद के किसी के लिए नही रोई । उन्होने उबैद अल मकतब ﷺ से पूछा की (क्या) उन्हे पता है की आसमान व ज़मीन मोमीन पर नहीं रोते ? (फिर) फरमाया : 'वो जगह रोती है जहां वो रहता है और आसमान में जहां से उसका अमल बुलन्द होता है ।' फिर (उबैद) से पूछा क्या तूं जानता है की आसमान के रोने से क्या मुराद है ? (उबैद) ने अर्ज किया, 'नही' । (इब्राहिम नखइ ﷺ) ने फरमाया : वो सुर्ख़ (लाल) हो जाता है और उसका रंग रंगे हुए चमडे की तरह सुर्ख़ हो जाता है, हजरत यह्या बिन जकरिया ﷺ को जब क़त्ल किया गया तो आसमान सुर्ख़ हो गया और उसने खून बरसाया और जब हजरत इमाम हुसैन ﷺ को शहीद किया गया तो आसमान सुर्ख़ हो गया ।

* इमाम इब्ने अबी हातिम ﷺ ने हजरत ज़ैद बिन ज़ियाद ﷺ से रिवायत नक़्ल की है **जब हजरत इमाम हुसैन ﷺ को शहीद किया गया तो चार माह तक आसमान के किनोर सुर्ख़ (लाल) रहे ।** (तफसीर अल दुर्रे मन्सुर, जिल्द-05, सफा-1112/1113)

◈ सूरज को ग्रहण लगा और सात (7) दिन तक अंधेरा छा गया ◈

* हजरत अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती ﷺ फरमाते है : जब सैय्यदना इमाम हुसैन ﷺ शहीद किए गए उस दिन सूरज को ग्रहण

लग गया । सात दिन तक दुनिया में अंधेरे का आलम रहा । 4 महिनो तक आसमान के किनोर सुर्ख (लाल) रहे । धीरे धीरे ये सुर्खी (ललाश) चली गई । मगर आज भी सुब्ह - शाम के वक्त इसी सुर्खी को देखा जाता है जो इससे पेहले नहीं थी ।

* रिवायत है की जब इमाम हुसैन رضي الله عنه को शहीद किया गया तो इतना जबरदस्त सूरज ग्रहण हुआ की दिन में सितारे निकल आए । (मजमाउल जवाइद, जिल्द-07, हदीस-115-163)

◈ सितारे टूटने लगे ◈

* यज़ीदी लश्करीयो ने जब इमाम हुसैन رضي الله عنه के लश्कर में एक उंट को जिब्ह किया तो उसका गोश्त सुर्ख (लाल) हो गया और पकाया तो कडवा हो गया । दीवारो पर धूप का रंग जाफरानी (केसरी) रहा । सितारे एक-दूसरे पर टूट कर गिरते रहे ।

(शहीद इब्ने शहीद, पेज-365/366) (तारीखुल खुल्फा - पेज-304) (सवाइके मुहर्रिकह, पेज-645)

* हजरते उम्मे हिब्बान फरमाती है की : जिस दिन हजरत इमाम हुसैन رضي الله عنه शहीद किए गए उस दिन से हम पर तीन रोज तक अंधेरा रहा और जिस शख्स ने मुंह पर जाफरान (केसर) लगाया उसका मुंह जल गया और बैतुल मुकद्दस के पथ्थरो के नीचे ताजा खुन पाया गया । (ख़साइसे कुबरा, भाग-2, पेज-206)

◈ आसमान से खून बरसा ◈

* हजरत अली बिन मसहर अपनी दादी से रिवायत करते है की वो फरमाती है : मैं हजरत इमाम हुसैन رضي الله عنه की शहादत के वक्त जवान लडकी थी, कई दिनो तक आसमान उन पर रोया या'नी खुन बरसा । (बैहकी (इमाम बैहकी), सिर्रुश्शहादतैन, पेज-33)

* इमाम इब्ने शीरन फरमाते है की : बेशक दुनिया पर तीन दिन तक अंधेरा रहा और आसमान पर सुर्खी (ललाश) ज़ाहिर हुई और आसमान पर शफक के साथ जो सुर्खी होती है वो सैयदना इमाम हुसैन رضي الله عنه की शहादत से पहले नहि थी ।

(तहजीबुत्तहजीब, पेज-354) (सिर्रुश्शहादतैन, पेज-33) (बहवाला : खुत्बाते करबला, पेज-215-216) (सवाइके मुहर्रिका, पेज-645)

◈ सैय्यदना इमाम हुसैन رضي الله عنه की शहादत पर जिन्नातो की नौहा ख्वानी ◈

मदीना शरीफ, बारगाहे रसूल ﷺ में जिन्नातो की नौहा ख्वानी

* इमाम अहमद बिन हम्बल رحمة الله عليه - हजरत अब्दुर्रहमान मेंहदी बिन मुस्लिम से रिवायत करते है की उम्मुल मो'मिनीन सैयदा उम्मे सलमा رضي الله عنها ने फरमाया : मैंने सुना शहादते हुसैन رضي الله عنه पर जिन्नातोने नौहा ख्वानी की वो रोकर ये पढ रहे थे ।

"अय्युहल क़ातिलून जहलन हुसैना उबश्शीरु बिल अज़ाबि वल तन्कील"

(तरजुमा : अय हुसैन رضي الله عنه के नादान क़ातिलो तुम्हारे लिए सख्त इबरत नाक अज़ाब की बशारत है ।)

"कुल अहलिस्समाई यदउ अलयकुम व नबीय्यीन व मुरसलीव्व कबील"

(तरजुमा : तमाम अहले आसमान (मलाईका) तुम पर बद्दुआए करते है और सब नबी व मुरसल वगैराह भी ।)

"कदलअ-न-तुम अल लिसानी दाउद व मूसा व साहिबुल इन्जिल"

(तरजुमा : बेशक लानत किए गए हो तुम हजरत दाउद और मूसा और साहिबे ईन्जिल (ईसा) की जुबानो पर ।)

* हजरत मैमुना رضي الله عنها फरमाती है की उन्होने हजरत हुसैन رضي الله عنه पर जिन्नात को नौहा करते सुना है । (शहीद ईब्ने शहीद, पेज-365) (दलईलुन्नबुव्वत, अबु नईम असफहानी, जिल्द-02, हदीस-1801-1804) (सवाइके मुहर्रिका, पेज-191) (अलबिदाया वन्निहाया, जिल्द-08, पेज-201) (मजमाउल जवाईद, जिल्द-7, किताब मनाकिब, हदीस-15179, 15180) (हाफिस हैसमी رحمة الله عليه कहते है की ये दोनो रिवायत सहीह है ।)

◈ ग़मे हुसैन ﷺ में ज़मीन का गिरया करना ◈

وعن الزهری، قال: مارفع بالشام حجر یوم قتل الحسین بن علی، إلا عن دم.

तरजुमा : इमाम अल जुहरी रिवायत करते है की इमाम हुसैन के क़त्ल के दिन शाम (सिरीया) में जो भी पथ्थर उठाया जाता उसके नीचे से ताज़ा खून नज़र आता ।

(मजमा अलजवाइद, जिल्द-07, हदीस-15160) (हाफिज हैसमी कहते है की यह हदीस सहीह है ।)

◈ बरतन खून से भर गए ◈

* हजरत बुशरा अज़वियाह ﷺ फरमाती है - "जब हजरत इमामे हुसैन ﷺ शहीद किये गए तो आसमान से खून बरसा । सुब्ह को हमारे मटके, घडे और सारे बरतन खून से भरे हुए थे ।" (सवाइके मुहर्रिका, पेज-644)

* शहादते हुसैन के बाद जो भी वाकेआत पेश आए जैसे कि ज़मीन ने खून उगला, आसमान से खून बरसा, सूरज को ग्रहण लगा, ये सब वाकेआत बहवाला अल्लामा इब्ने हजर अस्कलानी, इमाम बैहकी, हाफिज अबू नइम अस्फहानी, अल्लामा इब्ने कसीर, इमाम जलालुद्दीन सुयूती और शाह अब्दुल अज़ीज़ मुहद्दीस दहेलवी ﷺ जैसे जलीलुलकद्र मुहद्दीसीन ने अपनी मो'तबर किताबो मे नकल किए है । जिनके हवाले उपर दिए हुए है ।

◈ गमे हुसैन ﷺ मैं गिरया करना (रोना – ग़मगीन होना) के मुता'ल्लिक इमाम अहमद बिन हम्बल ﷺ की रिवायत ◈

* अस्वद बिन आमीर रिवायत करते है अल रबीअ बिन मन्जर से वह अपने वालिद से की, इमाम हुसैन ﷺ फरमाते है की : "जो आंख हमारे ग़म में रोई या एक आंसु हमारे लिए गिराया, अल्लाह उसे बहिश्त (जन्नत) से नवाजेगा ।"

(फजाइले सहाबा, इमाम अहमद बिन हम्बल, जिल्द-02, सफा-675, हदीस-1154, दार अल मारफा, बैसत)

◈ फरिश्तो का ग़मे हुसैन ﷺ ◈

* कुतबुल अकताब, गौसुस्सकलैन, महबूबे सुब्हानी, सैयद अब्दुल क़ादिर जिलानी ﷺ की तरफ मन्सूब गुनियत्तुतालिबीन में है की, हजरत उसामा हजरत सैयदना इमाम जाफर सादिक़ ﷺ से रिवायत फरमाते है की : जिस दिन हजरत हुसैन ﷺ शहीद हुए उस दिन से 70,000 फरिश्ते कयामत तक रोते रहेंगे । (गुनियतत्तालिबिन, पेज-432) (बहवाला - शामे करबला, पेज-235)

◈ बाबा फरीदुद्दीन गंजेशकर ﷺ का मुहब्बते हुसैन ﷺ में आंसू बहाना ◈

* सुल्तानुल औलिया हजरत ख्वाजा निजामुद्दीन औलिया ﷺ फरमाते है की, मैं माहे मुहर्रम शरीफ **656** हिजरी में सुल्तानुल मशाइख, सिराजुल औलिया, शैखुल इस्लाम वल मुस्लिमीन हजरत बाबा फरीदुद्दीन मस्उद गंजशकर ﷺ की खिदमते अकदस में हाजिर हुआ तो आपने आशूरा की फज़ीलत में फरमाया -

* इन अशरा में किसी और काम में मशगूल नही होना चाहिए । सिवाय इताअत, तिलावत, दुआ व नमाज वगैराह । इस लिए की इस अशरामें कहरे इलाही भी हुआ है और बहुत रहमते इलाही भी नाज़िल हुई है । बाद अजां फरमाया की, "क्या तुझे मालुम नही की इस अशरा में हुजुर ﷺ पर क्या गुजरी ? और आपके फरज़ंदो को किस तरह बेरहमी से शहीद किया गया ? बाज़ प्यास की हालत में शहीद हुए की इन बदबख्तों ने इन अल्लाह ﷻ के प्यारो को पानी का एक कतरा तक न दिया । जब शैखुल इस्लाम ने यह बात फरमाइ तो एक नारा मार कर बेहोश होकर गिर पडे । जब होश में आए तो फरमाया कैसे संग दिल काफिराने आकेबत, बैसआदत और नामहेरबान थे ? हालांकी उन्हे खूब मालूम था की यह दीन व दुनिया और आखिरत के बादशाह के फरज़ंद है, फिर भी उन्हे बडी बेरहमी से शहीद किया और उन्हे यह ख्याल न आया की कल कयामत के दिन हजरत ख्वाजा-ए-आलम ﷺ को क्या मुंह दिखाऐंगे ?"

(राहतुल कुलुब, पेज-57) (बहवाला : शामे करबला, पेज-335/336)

◈ ख्वाजा निजामुद्दीन औलिया ﷺ का ग़मे हुसैन ﷺ में रोना ◈

* हजरत ख्वाजा अमीर खुसरो निजामी फरमाते है की, "मुहर्रम की 5 तारीख को सुल्तानुल औलिया हजरत ख्वाजा निजामुद्दीन औलिया, महबुबे इलाही ﷺ की कदमबोसी का शर्फ हासिल हुआ। बातचीत के दौरान हजरत ख्वाजा निजामुद्दीन औलिया ﷺ खूब रोने लगे और फरमाया की, हजरत फातिमा ﷺ के जिगरगोशो का हाल सबको मालूम है की ज़ालिमो ने उनको दश्ते करबला में किस तरह भूखा-प्यासा शहीद किया। फिर फरमाया की इमाम हुसैन ﷺ की शहादत के दिन सारा जहां तीरह व तार हो गया, बिजली चमकने लगी, आसमान और जमीन जुंबीश करने लगे, फरिश्ते अकब में थे और बार बार हक तआला से इजाज़त तलब करते थे कि हुकम हो तो इन तमाम ईजा दरिन्दो को (यजीदीयों को) मलिया मेट कर दे। हुक्म होता है की तुम्हे उससे कुछ वास्ता नहि है, तकदीर यूं ही है, मैं जानुं और मेरा दोस्त हुसैन ﷺ। तुम्हारा ईसमें दखल नही है। मैं कयामत के दिन उन ज़ालिमो के बारे में उन्ही (अपने दोस्त) से फैसला कराउंगा, जो कुछ वह कहेंगे उसी के मुताबिक होगा।"

(अफजलुल फवाइदा, उर्दु तरजुमा, पेज-75) (बहवाला : शामे करबला, पेज-336)

◈ गौसुल आलम, मेहबुबे यज़दानी, सुल्तान सैय्यद मख्दुम अशरफ जहांगीर सिमनानी ﷺ (किछौछा शरीफ) का ग़मे हुसैन ﷺ और मुहर्रम के 10 दिनो का अमल ◈

* शैखुल आरफीन हजरत निजाम यमनी ﷺ की किताब 'लताईफे अशरफी' जिसमें सैय्यद मख्दुम अशरफ जहांगीर सिमनानी ﷺ (किछौछा शरीफ) की सवानेह व फज़ाइल और मल्फूज़ात का तज़किरा है उससे सैय्यद मख्दुम अशरफ ﷺ का मुहर्रम के अव्वल १० दिनो में ग़मे हुसैन ﷺ मनाने के बारे में 'लतीफा ईक्यावन : अलम ओ तबल वगैराहा' के बारे में 'दौराह' के जिम्मे कुछ ईस तरह नकल किया गया है। 'अक़ाबिर-ए-रोज़गार और **सादात-ए-सहीहुन्नसब** का अमल है की वोह मुहर्रम के इब्तेदाइ (शरुआती) दस (10) रोज़ में दौराह करते है और ज़म्बिल (Basket) को भी गर्दिश देते है। विलादते सब्ज़वार में सैय्यद अली कलन्दर ख्वाजा युसुफ चिश्ती ﷺ के मुरीद बडे आली मरतबा बुजुर्ग थे। और उनका मामुल था कि **मुहर्रम के अशरा अव्वल (शरुआती दिनो) में अलम के नीचे बैठते थे और अपने मुरीदों को दौराह के लिए भेज देते थे और कभी खुद भी दौरा करते थे। ग़म-ओ-अंदोह के मरासिम बजा लेते, नफीस लिबास इस अशराह (दिनो) में नहि पहनते थे और एश-ओ-शादी के अस्बाब तर्क कर देते थे।'**
* **"सैय्यद अशरफ ﷺ ने भी कभी ये दौर तर्क नहि किया। सैय्यद अली कलन्दर ﷺ की तरह खुद अलम के नीचे बैठे और अस्हाब को दौरा की इजाज़त देते लेकिन अशराह के आख़िरी तीन दिन खुद भी अस्हाब के साथ गलीयों मे गश्त लगाते थे।"**

◈ सैय्यद मख्दुम अशरफ ﷺ के पीरो मुर्शीद मख्दुम अलाउद्दीन गंजेनबात ﷺ का मुहर्रम के 10 दिनो में ग़मे हुसैन ﷺ ◈

* सैय्यद अशरफ जहांगीर सिमनानी ﷺ फरमाते थे की जब वह बंग़ाल में हज़रत अलाउद्दीन गंजेनबात ﷺ (आपके पीरो मुर्शीद) की ख़िदमत में हाज़िर थे तो वहां भी एक मरतबा ये बहश हुई थी और बंग़ाल के आलिमो और फाज़िलो ने बहश और हुज्जत के बाद येह तय किया था कि यज़ीद पर लानत-ए-फिस्क जायज़ है।
* **मख्दुम अलाउद्दीन ﷺ का भी यही दस्तूर था कि अशरा-ए-मुहर्रम के इब्तेदाइ दस दिन (10 Days) गिरयाज़ारी में बसर करते थे और फरमाते थे की वोह वली भी अजीबो गरीब होगा जो ख़ानदाने रसूल ﷺ और जिगर गोश-ए-बतुल ﷺ के ग़म पर आंसू ना बहाये और उनका ग़म ना करे।**

बहवाला : लताइफे अशरफी (उर्दु), जिल्द-दुवम, सफहा:244-247

मुअल्लिफ : शैखुल आरेफीन हज़रत निजाम यमनी ﷺ

तरजमा : हजरत अल्लामा मौलाना हकीम सैय्यद शाह अब्दुल हयी अशरफी-उल-जिलानी ﷺ, सज्जादानशीन व मुतवल्ली किछौछा शरीफ

मुरत्तब : शैखे तरीकत, काइदे अहले सुन्नत, मज़हर-उल-मशायेख हज़रत सैय्यद शाह मज़हरुद्दीन अशरफ अशरफी-उल-जिलानी

* **इसी तरह लताईफे अशरफी के मुतरजिम 'अल्लामा शम्स-अल-हसन बरेल्वी और प्रोफेसर एस.एम. लतीफल्लाहने "लतीफा-51 तलब-ओ-अलम और ज़म्बिल फीराने का बयान" के जिम्मे में कुछ इजारत तरजमा यूं फरमाया है ।**

* मजलिस में रोज़े आशुराह का ज़िक्र हुवा । हज़रत कुदवतुलकुब्रा (सैय्यद मख्दुम अशरफ) ﷺ ने फरमाया की अकाबिराने ज़माना और बुजुर्गाने शेहर, खास तौर पर वोह हज़रत जो **'सहीहुन्नसब सादात'** और अली हसब नक़ीब है, मुहर्रम के इब्तेदाई दस रोज़ (1 से 10 चांद मुहर्रम) दौरे पर जाते और ज़म्बिल फिराते है, जैसा की बयान किया जा चूका है की मुल्क सब्ज़वार में ख्वाजा अली ﷺ जो अस्हाबे सुफीया के पेश्वा और उस गिरोह के सरदार थे, **मुहर्रम के दस दिन 'अलम के नीचे' बैठते थे और अपने मुरीदों को दौराह करने भेजते थे । कभी-कभी खुद भी दौरे पर चले जाते और रश्मे अजादारी अदा करते थे । मसलन अशरा-ए-मुहर्रम में बेशफिमत लिबास नहि पहनते थे और एश-ओ-ख्रुशी के अस्बाब तर्क कर देते थे ।**

* "हज़रत कुदवतुल कुब्रा (सैय्यदा मख्दुम अशरफ) ﷺ ने आशुरा के मामुलात तर्क नहि किये, कभी ब-ज़ात खुद अलम के नीचे बैठते और कभी सैय्यद अली कलन्दर ﷺ को जो आप के मुख्लीस अस्हाब-ओ-अहबाब में थे, उनको हुकम फरमाते थे कि वोह अलम के नीचे बैठे । अशरा के आखिरी दो-तीन रोज़ (या'नी मुहर्रम के 8, 9, 10 चांद) यज़ीद पर लानत करते थे और आप के अस्हाब भी आप की मवाफक़त करते थे ।"

* **हज़रत कुदवतुल कुब्रा (सैय्यदा मख्दुम अशरफ) ﷺ फरमाते थे, "हज़रत शेख (आप के पीरो मुर्शीद मख्दुम अलाउद्दीन ﷺ) मुहर्रम की पेहली तारीख से दस तारीख तक गिरया-ओ-ज़ारी करते थे और फरमाते थे कि वोह अजिब दिल है जो खानदाने रसूल ﷺ और जिगर गोशाने बतुल ﷺ के ग़ममें ना रोये और उनकी ग़म पुरसी बे-तआल्लुक हो जाए । सुब्हानल्लाह यही अक़ीकी नियाजमंदी है ।"**

"जो शख्स इस तरह के ग़म पर गिरया-ओ-ज़ारी ना करे शायद इस का दिल पथ्थर का होगा।"

(लताईफे अशरफी, जिल्द-03, सफहा : 425-433)

:: नोंट ::

मस्लके अहले सुन्नत के अकाइद के मुताबिक 'ग़मे हुसैन ﷺ में रोना, गम करना जाईज़ है ना कि मातम करना । मातम करना नाजाईज़ है । ये अहले सुन्नत का तरीका नही है । ग़म में रोना या ग़म मनाना सिर्फ जाईज़ ही नहि बल्कि सुन्नते रसूल ﷺ व सुन्नते अहले बैत ﷺ व सहाबा ﷺ है ।')

ईमाम जाफर सादिक़ फाउन्डेशन (अहले सुन्नत),
मोडासा-अरवल्ली, गुजरात ।
फाउन्डर एण्ड चेरमेन : डॉ. शहेजादहुसैन यासीनमीयां काजी । (M) 8511021786